

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्तलिखि

संग्रह :—

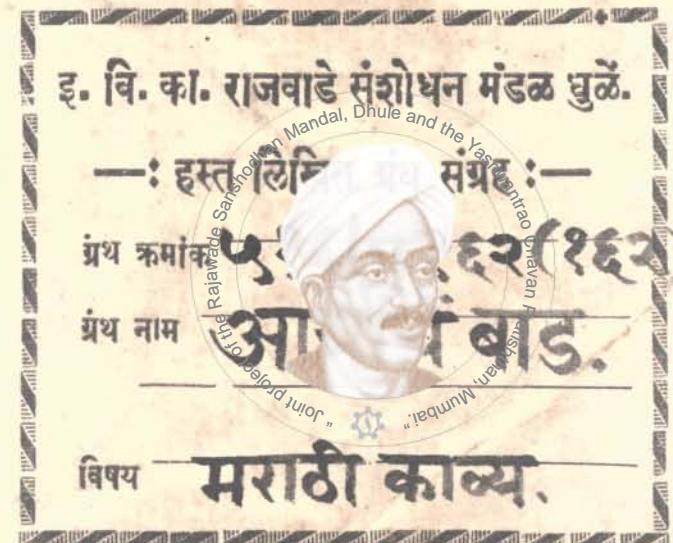
ग्रंथ क्रमांक ५०

ग्रंथ नाम

दृष्टिहरण

आंबाड.

विषय मराठी काव्य.





संग्रहीत

॥ आर्यमातृकाणि २०१४ ॥



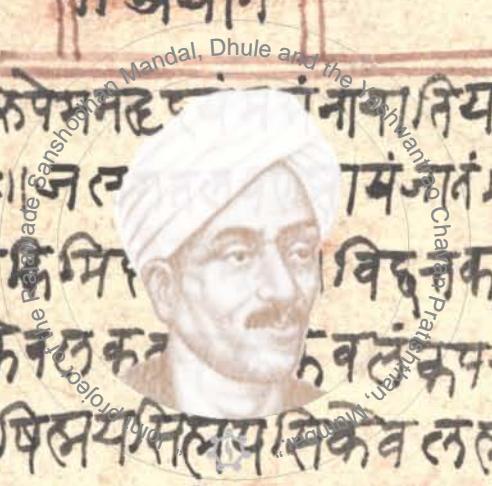
Joint Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishthen, Mumbai

(2)

॥ श्रीगणेशायनमः अथरवलतं त्रिलोक्यं वे ॥ प्र  
अत्र विमाह ॥ प्रथमं अग्निसंज्ञं च द्वितीयं वायुसंज्ञं  
तीयं जलसंहं च चतुर्थं पृथिव्यं संहं ॥ १ ॥

## ॥ अर्थ ॥

॥ हरिकपेसमहर ॥ नानानियत्वसा ॥  
॥ हस्ते ॥ जल ॥ मंजरं मंतक ॥  
॥ दोमस्तम्भि ॥ विद्वन्नकवयः क ॥  
॥ वपकेवलक ॥ वलं वपयः ॥  
॥ विदुषिष्ठयनित्यसि ॥ तिकेवलत्वद्वस्ति ॥  
॥ ठकेवलत्ययसि ॥ चन्द्रुरानन्दजग ॥  
॥ दीम्बरसाचादुपोत्रभूतप्रदिस ॥  
॥ अश्वतिसपं भूनयस्त्रास्त्रास्त्रुतपावल ॥  
॥ सिस्तुपहास ॥ ३ ॥ रामधनं जयकुटिए ॥  
॥ कामुरदण्डुलकाष्ठृतैलगरोल ॥  
॥ हिपिच्छविलेहेन्दुजनुमजेन्मातला ॥  
॥ जसाबडल ॥ ४ ॥



The portrait is of the Right Ade Sanshodhan Mandal, Dhule and the 'Jyawantrao Chavhan' Pratishthana.

गीता ॥ एवं शायनमः ॥ तिथै हये जरि  
 तिथै वै अर्ही हरि गुण हृदय का बाद  
 माजि ॥ तिथै तास ॥ दै वतुर लेसं  
 त सिरो मृष्टि विरागुदा माजि ॥ ४ ॥  
 ॥ श्री दता ग्रय स्वामी न मिदि न बंधन दे  
 वा ॥ तु मचे लवन बूरा यामा ॥ स्या  
 द्वितीयं दबुधि या के वा ॥ ५ ॥ स्वामी उ  
 भा वे परमा ता ॥ वक्ष सखा च  
 जनका चा ॥ लै दबुल्ड माथा  
 जे न मुनज ॥ से नं दाचा ॥ ६ ॥  
 कितन क्षय ॥ राजा त्वाम  
 ण उन जाह द्वामा रा ॥ या जपुठे मृ  
 ल्क चे न ल्क चे बक्ष सुण तसे हुका  
 मारि ॥ ८ ॥ द्वितीयं अवण करुण या  
 जो का द्विज मस्तु द्विजु का का वि ॥ या  
 चे दुसर विघ्रे हरि ने निं हस की व  
 का ॥ का वि ॥ ९ ॥ द्वितीयं अवण करुण  
 या का ल्क प्रे भ्रे जो दुल तो सभ्रे मासि  
 या चे भव जल इन्द्रु इन्द्रु गुण हरि कर  
 जो दुनि उभा माजे ॥ द१ ॥ १० ॥



The Rajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Research Foundation, Mumbai.

नरवमण्डीरतिअधरामृतरसम्भ  
 ला सौदेवअं कुरलि॥ श्रीचिसब  
 छसपत्ति चूवितसेहमनोरमामूर  
 लि॥ ३॥ सम्भोदवामनागप्रीस  
 द्वाणि अंभगुक्या १८" वोवि  
 मुकुशचिक्किंवा आर्योमयूरपता  
 चिः॥ ४॥ अर्योमयुवा याठिरुयते॥ ५॥  
 रावणराजस" पापागर्वेधन  
 न्य विहंकरी॥ रानभावेता  
 द्वगोरवमाहुः ३॥ आरक्षि  
 प्राप्यासुदुष्ट ग्रस्तराजराया  
 हे॥ कर्मेरघुपतिसर्वदेसितोप्रिय  
 रामरायोहे॥ २॥ तेनेतुष्टपुष्टपाव  
 लिसञ्जस्तेधनादिसमाना॥ ईतवर  
 शास्त्रज्ञेष्टबापात्रैकेत्यजुनिअ  
 शिमाना॥ ३॥ जेणेकल्यामसाधिसि  
 काम धर्मार्थक्षेमोक्षपासि॥ करणेत्वर्तिन  
 अताभूमिज्यारत्नधैवं मोक्षपासि॥ ४॥



उमेशजावदे, Sangodhan Mandal, Dhule and the Year  
 Chavantara Pratishtithi, Mumneka

पूर्वेदारक्रमात्रापादेचाष्टादशः  
तियेष्ये॥ द्वादशतथा। तत्त्वेष्येष्यं च  
पैद्रोगेतेचसार्योक्ता॥ १॥ जासि  
ज्ञासोइतराच्याउभवपुरोचीआ  
र्गात्माः॥ उगुनत्माविजानालं  
कापोहस्तीमतीवंशाला॥ २॥  
शरणंगामाग्णसीकोताहोई  
ल्डउक्तेरुत्पाय॥ ३॥ जासि  
दरिसीअख  
रघुविरको  
उसोभाग  
पञ्चलेकर्त्तातेसंषयेन  
गेदाहाः॥ होइघनस्यामाच्या  
नम्भेक्तरेनिसीरदाहाः॥ ४॥ ख  
क्ति रदुलंशेहेत्रिरावधिबाचवस  
सहस्रएकसरे॥ परिक्तीरामाच्या  
भास्यामित्तोबालुएकनसु  
रे॥ ५॥ युक्तिएक्याकपिणे

कलहालिसमयलेकोलनि।  
 यताहारलकेसउडिसगआप्त  
 क्रिंदपभानि॥८॥ रुच१९  
 अवसयाद्वसयंकिंवाचन्त्यम  
 वचेत्प्रात्॥ यनिवरदरकर्तुकिं  
 वांछेलिक्रैहगद्यगद्यनि॥९॥  
 यासवराशसवयीछार्पीविरघुवि  
 रासिब्रह्महे० यालुकरा  
 यशाच्चत् सोतुलदेहे०  
 ॥१०॥ यापुरि० लालिज्ञोरु  
 निदशानन्दाला० लोलुज्ञेऽनु  
 जात्यागीनकोकर्तुसेक्षिवालि० + रुच  
 ॥११॥ दुश्शासनवोटायासेंवेष्टकुरु  
 क्तुतोदयालुगद्या० तेक्षास्मरलि  
 दृष्टाद्यद्यन्ति० लुगद्या० ॥१२॥  
 उयेदुतेयेथेवलयेडनिआक्षर  
 पाताते० याअपुत्याशत्रुयाद्वेसो  
 करतोसीपक्षपाताते० ॥१३॥ याप

मुक्ति  
पूर्ण

१) रेतुआतयेथेकासीलहनीनिरवेधं॥  
दकुनिवेधुत्वाचेमा रेनभथवाक रेनतु  
लवंदं॥३॥ रेकोनिरेसेमानिकोपेमार  
लहाचीजाभीप्रया॥ शरणं गवश्रीगमा  
सीरेलाधरेष्याप्तिप्रये॥२॥ तोग  
रुतोगुरुनंदननुपतोकर्णपितामहरे॥  
स्यानेधेनुवक्त्यादिनद्वा वगोपाळ  
गमदध्यहरे न एवेगाठार  
यकुरुक्टका उद्दोगीधन  
धनहाराध्याको कटञ्जलितपाहु  
दे॥४॥ अश्वद्वारा पवनवर्षतितनन  
ताँगोति गीतगंधर्व॥ सर्वत्रिलासाले  
आनंदाचेचौतीमाहापर्व॥५॥ अनकुं  
दुभिअसज्जहेडनियाकुमारनंदाचा॥  
आलागेकुलवासिजोचीसुखांशक  
दाचा॥६॥ भवगंडभवशासनायावते  
हारकरेनिराखविवा॥ पृष्ठनविकारणजे  
सेसुलभावरेसुटशक्तिराखविवा॥७॥ हे



Shankarwade Shashodhan Mandir, Dabhade and the Yashwantrao Chavhan  
Library, Mumbai

(8)

मनहेवै सनविनी जरि हरि भज  
 नी च होड निरतरे ॥ तरहु क्षणत  
 दही भव सीधु वे आपार निरतरे ॥ ८ ॥  
 चिंतु नी दुर्बिषय हेख तपा चीषा पकाये  
 हान करा ॥ श्रीमद्राघुभै वे जनी सा  
 दर काहो खकाये हान करा ॥ ९ ॥ लक्षा  
 तदक्ष आक्षी लक्षि जो रमभक्ति चाम  
 हि सा ॥ न रखर मि पश्चिमा प्रीये ज  
 रतो वंश तय मा ॥ १० ॥ तर  
 ले आप एर ई तो तय यर्थी की ता  
 री नी साधु ॥ ११ ॥ श्री द  
 उपाये जनसा हुत साधु ॥ १२ ॥ श्री द  
 ता व्रया ते तंतु त्या ते सम सल संताते ॥  
 साष्टांग नमन करि तो यां भाला वे म  
 यो रथं ताते ॥ १३ ॥ रति मोरे पंत आर्या  
 ॥

अथ इति अनतार

करुणा ब्रह्म वनि सध्या उद



Sri Rishabhdev Sanskruti Mandal, Double and the Yogi  
Jyotiprolal Chavhan Pratishthan, Mumbai.

कातमिनहो जागा॥ परेसदि म  
 इचकसादैवेब हुहिन मिनहे  
 जागा॥३॥ अनमथन समयि घे  
 ता प्रुष्टे अमला सिमंदरा हिना॥ व  
 चने दुख व लिमाश्या वदता तुज मि  
 च मंदरा हिना॥४॥ दंती धरा धरा  
 धरा या तेवा - पीबल न साया  
 स॥ शर्जा वदवे जाले  
 तुज कायज न सायास॥५॥  
 होता सी जेवा .. भ्रवर्णी पड  
 ता विहाक दासा चि॥ प्रहारा परि  
 मा सिवाए करसी ल हाक दासा  
 चि॥६॥ नीपटक पट्टेसति तुज हा  
 काड़दरा वया सब कि॥ नीर्बल पुड  
 लोल पुनि काक रिसी ल आशा आ

शाआबळि ॥५॥ कोषेन जास चिति  
 आपुलिजननी जिवे चिमारया ॥  
 स्यातुजकरुणा केसी बापा दिन ज  
 नास गराया ॥६॥ पाषाणा चिक्रे लिं  
 लाउ निरचे लगा चिया नखा रामा ॥  
 मजवरि कोपकराया दशा न नाचन  
 मि सक्तरामा ॥७॥ गोकुलवासी  
 दसित्तवा ॥८॥ नेजसादास  
 ॥९॥ नीचतुसा देवासाहुत  
 त्रसादास ॥१०॥ णाकरलगा  
 विसीतु सियड प्रमेस को लगेला  
 वा ॥११॥ परमद्विष्टचक सातव हृद  
 यामा सीक्कान बोलावा ॥१२॥ ज्यातु  
 जल्लायक विच्चामान सरुपेबसे  
 निदेवाजि ॥१३॥ स्यातु ने येवन क्षय दुर्घ  
 ट कैसे घडेल देवाजि ॥१४॥ एवं ॥  
 ॥१५॥ इति दशाजावतार आधीस ॥



Late Raja Vade Singhodhan Wandal, Dhule and the  
 Late Govindrao Chitao Pratisthan, Mumbai

(11)

उटनाबहुत्तरेनेकोटे जाना असेतु  
तिदेवि॥ पुसति जाहिं जानेपु  
सताज्ञानापुठेनपदठेवि॥ ३॥ किं  
वानारदआला आला पीतख  
कीयेखचरीते॥ प्रेमछजनगीत  
दुखाला हरेणायरीसवशक  
रीते॥ २॥ द्विंजामाजेदुदेवनभूव्या  
मार्गातआ-  
गेभयक्षमन-  
घडले॥ ३॥ किं  
दुसराकोनीदाननातआढळला  
॥ तछुभवैदेसेमिरस्यावरिकरुणा  
घनप्रभूवकला॥ ४॥ आथायेताज  
आत्म्यसीवतांडवातकैलासि॥  
कैलाकैआसेगरुठेपूर्विपुन्हुका  
येस्याचकैलासी॥ ५॥ इति मोरोपंत  
विराचितार्थीसमाप्ता एवं ५९॥ ॥

सुंदरमुरलि आधरि अंगि चंदणग  
 व्यातवन माळा ॥६४॥  
 याधीगे मोहु नीबले चपडतिगला ॥७॥  
 सुनि कीति मीति मंदकरु आहे पति  
 रसनापुरेण वर्णया ॥ येक्या जगदि  
 शाळा आनामा चानि छळं ने वर्णया  
 ॥८॥ रति ।

रीत्यर्थल अ  
 रजा मीलतो  
 आजितु द्रक्षा  
 नहुता चीकी आउनी वती ॥९॥  
 किस्तिपुरुष सीरवंडी खाने सम  
 राति भिघरा हिना ॥ मी ही पर्हेला  
 पाप्तिते सेवरसु किंति राहेना ॥१०॥  
 इति ॥ ॥ बहुधा वळी ने द्वारक्ष  
 रुभरीह सोडितान येदेवा ॥ न तु  
 कावी छळपापे प्रायश्चित्तार्थ साधु



चिसेवा ॥ १ ॥ प्रायः सुमुहुर्तीचाशोध  
 कराया सिल्गत्वावेळ ॥ होये महला  
 र्यपरि प्रभुचातोनीसुसहरवेळ ॥ २ ॥  
 कीमी भगवंताचाभाग असे अणिले  
 मनी स्वामी ॥ हेसस्य चीपरी केवा हामे  
 द प्रभुचरातु स्याधामी ॥ ३ ॥ कीवाचु  
 कतोका हिसदल्लनेचिमायतावस  
 सी ॥ तरीहे ए मुद्राप्रसर  
 तसानमसी ॥ ४ ॥ तुयेकाकिपा  
 हुनिस्वर्कदे आहु ॥ सुटला  
 सागरसिकतासेतुवेकाव्यस्यापुटेचाले  
 ॥ ५ ॥ गरसमधमैरेसेजुनिजेयुरुना  
 मासृतसागरानतरतरले ॥ तेविन  
 वेवलतरले साचेभवसारिंगेष्टत  
 रतरले ॥ ६ ॥ कियाचकासीदेतास  
 रले आरे हीमुक्तिघनराशि ॥ भज्ञि

चिमजश्यावेदेवात्मा आमृतयाम्येनन  
 रासि॥४॥ रवि॥ ॥ ताजरविलेतेजी  
 जयेशदुग्धाभ्यितरंगरंगनाथाने॥ भ  
 क्ति क्षानेज्यासीमतिपोसि जेविअंग  
 नाथाने॥५॥ रवि॥ ॥ जिवैनारसु  
 धाया ब्रंस्मां उघटे भरेति उधरलि॥  
 जीजेष्टसुरभी भागी चुंबितेहे  
 मनोरमामुरलि॥ रहिव जबाका  
 हि जीवरी॥ तेव चुलि॥  
 वेशप्रभवास  
 व्यक्तानेकरु  
 गीणीजीवत  
 विष्वमनिमुरलि॥ नखमणि कीर  
 लि अधरांमृतरससिकासदैव अं  
 कुलि॥ ६॥ यन्माधुर्यालक्षुष अवरे  
 वालि सुधामनीमुरली॥ भक्तमय  
 रघनाहरे चुंबी तसे हेमनोरमामुर  
 लि॥ ७॥ रवि॥ ॥ भास्त्ररवंशो  
 तसे पदयासे जेशोले सीउधरलि॥

त्वानामासृत्यसागरेनरत्नुनवजा  
 येतीनरत्निः॥३॥ साराद्वयपता  
 रात्यासौ संरोच्याईत्वासने॥ सारा  
 मारविनेले कायकरावेजगदेधा  
 राने॥४॥ सत्यकल्यनीनिर्विक  
 ल्यद्रमकोटि कल्यदेनीजभक्ता॥ हि  
 धीच सादिवसानीसीअसतालोभ  
 मोहवीशया नान्त्यसीव  
 खुएणामपुरा वत्तुजनी  
 रामकथा॥५॥ धन  
 ह्याजापुरापुरागथा॥६॥  
 इति॥ ॥६॥ यावेकरुणाभाकि  
 पुरुषानोरथकरि सरव्यादेवा॥७॥  
 दिनरंकतुजविलेभावतरेणे अ  
 नंतकेशवा॥८॥ जेंविदागेपाळा  
 हृष्ट्विद्वुमकुंदघन)निलाधु  
 तकोस्तुभवनमाळा पि तांबरधारि

देवकिबाळा॥२॥ शात्रादेवदुक्षा  
 ला अस्योकश्चात्राकश्च स लोठा  
 या॥ भेदाया जगदेश मग जगि  
 च्यापुन्हा न पोटाया॥३॥ रति श्रीमो  
 रोपंतरायी समाप्ताः॥४॥ ॥४॥

आर्या

नामाया मात्रा विधानी हावि लीही तु म  
 रति॥ नामात्रे न विसंधुज डरी  
 तारि तोरति गरसंमगरस  
 म जुनि ज्ञेयुर रसात्तरतर  
 ले॥ तेच्चिन्नते न क्षयाचेभव  
 सागरि पितरतरले॥२॥ तरल्यया ति  
 राजादर्शीनहो तच्चिंतरायाचे॥३॥  
 र्शनेसुदर्शीन चटघटकटक संतरा  
 याचे॥४॥ गरुजसन अवतारि क्षि  
 ति वरिधरनी रसाधुताराया॥ भा  
 रायादुष्टाते पृथिव्यासर्व भारहा

३

राया॥४॥ पशुत्वाकाटेगो तिनवर्जुनसे  
 बीतापरीविरक्ष॥ परेतोवाजतअनेअ  
 सेजाणताजगीविरक्ष॥५॥ धरुनिसंकृ  
 ष्टनिकडउउउउसंभक्तो उयला॥ जो  
 उयला असुराने जेविपवनानेवक्षमो ति  
 यला॥६॥ दनुजोहरफोहुनिचररररर  
 निजकंठदेखाने रत्न॥ आंठगेप्र  
 सुहाआळादे बाक्षने॥७॥  
 रातमुखेकवारा राठुबीषनरूपध  
 रत्ने॥ पाताहः नीबकीचसामर्थ  
 तेजपैहरत्ने॥८॥ हंसमुक्तानेतिकल  
 कलाटकेलाकाकनि॥ हकानिनभ  
 भरत्नेनाहजायसुराच्या आनादहा  
 कानि॥९॥ जपतेपसाधननगल्गेयेक  
 साधुसाधुप्रयवंदावे॥ श्रीमज्जगद्वा  
 चेकुमपि आपपमंदावे॥१०॥ आसा



Joint Project of the Bhawadi Sanshodh Mandal, Dhule and the Kashwantee Charkhi Panjraon, Mumbai

मुक्तासा लोदविनपरि जरि तुल्यनगेसे  
ल ॥ लागत प्रभु कंटे घालु रानकु ग  
वा लक्ष्मी टमागल ॥ १३ ॥ इति सोरोपंत  
विरचितार्यासमाप्तः ॥ ॥ एवमादि

**स्त्री**  
**श्री** तः ॥ १५ ॥ जयनुक्तसिंजयनुक्तजयज  
यं असि कर्त्तुक्ता तनसे से ये क्रोदवसी  
नुजवाचुनः ॥ ३ प्रथा सि ॥ १६ ॥  
माहात्म्याज गृष्णतेर्दवी आ  
दिभगानि ॥ ग विक्री आपु ले  
तुक्तियेभक्तासे पावनिर्वानि ॥ १७ ॥

कोल्हासुरमर्दित्ता तिजरि छपाकरि  
अग्रामा वरि ॥ हेविमागतो तुनलारो मा  
से हृदयमंदीरि ग इन ॥ ॥ १८ ॥  
दाविसिताजननि श्रीरामा चिमनो जि  
रामवधु ॥ व्यर्थन कोरे वापारक्षसकु



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)